फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 265 1/- जुलाई 2010

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

जंजीरें : आज उत्पादन का एक पहलू

✶ एक छोटे कम्प्युटर में करीब 1800 हिस्से-पुर्जे होते हैं और इसे बनाने में लगभग 1000 अलग-अलग कदम होते हैं। यह हिस्से-पुर्जे, यह कदम 10-20 देशों में फैले होते हैं। चीन, अमरीका, जापान, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर आदि में हिस्से-पुर्जे बनते और जुड़ते हैं तब एक सामान्य कम्प्युटर बनता है। छोटे कम्प्युटर के 1800 हिस्से-पुर्जों की तुलना में एक बड़े यात्री विमान में करीब दो लाख हिस्से-पुर्जे होते हैं।

✶ आज लगभग एक सौ करोड़ प्रकार के तैयार माल प्रयोग किये जाते हैं। इनके उत्पादन के लिये प्रतिदिन करीब तीन करोड़ टन वजन विश्व में इधर से उधर किया जाता है। उत्पादन के लिये जंजीरें और जंजीरों में जंजीरें हैं। यह पृथ्वी को कसती जकड़ में ले कर उलट-पलट रही हैं। तैयार वस्तुओं की खपत, उनका उपभोग और इसके लिये वितरण में इतना कुछ जो होता है वह उपरोक्त के अतिरिक्त है।

कोई कितने ही भ्रम क्यों न पाले, सामान्य तौर पर आज जो कुछ हम करते हैं वह मजबूरी में करते हैं। राजी से फैक्ट्री में खटने जाना हो ही नहीं सकता। ऐसे में निराशा, अति निराशा खटते-खटते मरना अथवा आत्महत्या करना ही लिये है। तो क्या करें ? मुक्ति हो सकती है क्या ? कैसे होगी मुक्ति ? अपने हाथों में यह है क्या ?

उल्लेखनीय उत्पादन आज सीधे-सीधे विश्व-व्यापी जटिल जोड़ों द्वारा होता है। जंजीरें और जंजीरों में जंजीरें सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैली हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ी-जुड़ा है और इस में इच्छा अथवा अनिच्छा के लिये कोई स्थान नहीं है। हम में से अधिकतर को जबरन जोड़ा गया है। हमें बाँध कर एक-दूसरे के साथ इस-उस बाड़े में धकेल दिया है और बाड़े से जुड़े बाड़े से जुड़े बाड़े ने सम्पूर्ण पृथ्वी को एक विशाल बाड़ा बना दिया है। उत्पादन के जटिल ताने-बाने, इसके आकार और बढती गति के साथ संचालन पर "वाह !" कहने वाले भी हैं पर मजदूरों के मुख से तो "आह !" ही निकलती हैं।

दूर-दूर फैले हिस्से-पुर्जों का उत्पादन और पूर्ण उत्पाद के लिये एक-दूसरे से जुड़ी करोड़ों गतिविधियाँ स्वयं में संकट लिये होती हैं। उत्पादन की जंजीरों और जंजीरों की जंजीरों को बनाये रखने के लिये बड़े-बड़े कम्प्युटर तो आवश्यक हैं ही, नियन्त्रण के लिये सुपरवाइजरों-मैनेजरों की फौज नाकारा है अगर दमन के लिये पुलिस-सेना का विशाल तन्त्र उपलब्ध नहीं हो। इसलिये कम्प्युटर-मैनेजर-जनरल हैं। फिर भी, उत्पादन में ही सन्तुलन इतने नाजुक हैं कि इस-उस कारण से "वाह !" को "आह !" में बदलने में देर नहीं लगती। समाधान के तौर पर अधिक बड़े कम्प्युटर, अधिक प्रशिक्षित मैनेजर, अधिक मारक क्षमता वाली सेना हैं जो कि संतुलन को अधिक नाजुक ही बना रही हैं।

बढती, फैलती, जुड़ती जंजीरों का ऐसा ताना-बाना है कि किसी जंजीर का, किसी बेल का एक कुण्डा भी हलचल में आता है तो पूरी उत्पादन प्रक्रिया हिल जाती है। हाल ही में तमिलनाडु में श्रीपेरूम्बुदुर स्थित हुँडई कार फैक्ट्री में एक विभाग के मजदूरों में हलचल ने उत्पादन ठप्प कर दिया। चीन में हिस्से-पुर्जे बनाने वाली एक फैक्ट्री में मजदूरों की हलचल ने चीन में होण्डा कार बनाने वाली चार फैक्ट्रियों में उत्पादन ठप्प कर दिया। कुछ समय पहले गुड़गाँव में वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाती रीको ऑटो फैक्ट्री में मजदूरों की हलचल का असर अमरीका स्थित कार फैक्ट्रियों में उत्पादन पर पड़ा। मजदूरों की "आह !" को "वाह !" में बदलने में ज्यादा झँझट नहीं हैं।

मजबूरी में करते हैं और डर-लालच में सिमटे होते हैं इसलिये हम जो करते हैं उसे और उसका आगा-पीछा जानने में आमतौर पर हमारी कोई रुचि नहीं होती। जबकि, आज उत्पादन की प्रक्रिया को देखते हुये अपने इस रुख में परिवर्तन हमें राहत देने के संग-संग मुक्ति की राह पर बढा सकता है। इसलिये :

– किस जंजीर के किस कुण्डे में हम काम करते हैं यह जानना बनता है। हम जिस पीस पर, जिस हिस्से-पुर्जे पर काम कर रहे हैं वह कहाँ से आया है और हमारे द्वारा काम करने के बाद कहाँ जायेगा यह जानना मुश्किल नहीं है। अपने दैनिक कार्य के दौरान हम यह पता कर सकते हैं।

– जिन मजदूरों से हो कर माल हमारे पास आया है और हमारे द्वारा काम करने के बाद जिन मजदूरों के पास आगे काम करने के लिये जायेगा उन से सम्बन्ध स्थापित करना थोड़ा कठिन है पर बहुत कठिन नहीं है। सम्पर्कों की तलाश आसान है। सम्पर्कों को बढाना और जोड़ बनाना सामान्य स्थितियों में सहज ढँग से कर सकते हैं।

– बायर के आने के समय फैक्ट्री मैनेजमेन्ट की उत्तेजना से हम सब परिचित हैं। बायर हो चाहे कम्पनी, छवि की बहुत चिन्ता करते हैं। छवि ने महामारी का रूप ले लिया है क्योंकि खोखलापन सार्विक हो गया है। तिनका भी अत्यन्त नाजुक सन्तुलन को बिगाड़ सकता है। इसलिये हम किसके लिये किस-किस के लिये माल बनाते हैं यह पता करना और उजागर करना बनता है। लेबल-चार्ट देखना, नाम लिख लेना कठिन नहीं है। बायर का पता-ठिकाना जानना और इस सब को उजागर करना थोड़ा-सा ही प्रयास माँगता है।

– हमारा कुण्डा किस जंजीर का हिस्सा है यह जानना सरल है। हमारी जंजीर किस जंजीर, किन जंजीरों से जुड़ी है यह जानने के लिये थोड़ा प्रयास आवश्यक है। औद्योगिक क्षेत्रों में अनेक जंजीरों में कार्यरत मजदूरों का आपस में जुड़ना मुश्किल नहीं है। माल का सतत आवागमन अलग-अलग औद्योगिक क्षेत्रों के मजदूरों के बीच सम्पर्क का, जोड़ बनाने का सहज जरिया बन सकता है।

– मजदूरों का बढती सँख्या में अस्थाई होना। एक मजदूर का कुछ महीने यहाँ तो कुछ महीने वहाँ होते हुये अनेक फैक्ट्रियों में जाना। काम के लिये मजदूरों का बहुत दूर-दूर जाना। यह आज मजबूरियाँ हैं पर यही सब सम्पर्क-सम्बन्ध-जोड़ के वाहक भी हैं, बेहतरीन वाहक बन सकते हैं।

सहज, सामान्य, दैनिक गतिविधि के तौर पर प्रत्येक मजदूर यह सब कर सकती-सकता है। अपनी इच्छा, अपने प्रयासों से दुनिया के मजदूर एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं। थोपे हुये जोड़ों की तुलना में मन से बनाये जोड़ों की रंगत ही अलग होती है। अपने इर्द-गिर्द से ले कर विश्व-व्यापी बनते जोड़ों में मुक्ति सामने नजर आने लगेगी।

अनुरोध

आप रिटायर होने पर **मजदूर समाचार तालमेल** के दायरे में मिलने-जुलने के स्थान के तौर पर अपने निवास के आसपास **बैठक** की स्थापना में रुचि रखते हैं तो कृपया हम से सम्पर्क करें। किसी की भी बैठक स्थापना में दिलचस्पी है तो कृपया मिलें।

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●फैक्ट्रियों में हर मजदूर का कर्मचारी राज्य बीमा, ई.एस.आई. होनी चाहिये। मजदूर दो-चार दिन के लिये भर्ती की गई हो चाहे ठेकेदार के जरिये रखा गया हो – प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. होनी चाहिये। फैक्ट्री में काम करते किसी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है : कम्पनी तथा सरकार के अनुसार वह मजदूर फैक्ट्री में काम नहीं करता-करती।

24 फरवरी को जारी आदेश अनुसार पहली जनवरी 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4214 रुपये (8 घण्टे के 162 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4344 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4474 रुपये (8 घण्टे के 172 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4604 रुपये (8 घण्टे के 177 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4734 रुपये (8 घण्टे के 182 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4864 रुपये (8 घण्टे के 187 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते : 1. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रम सचिव, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

ग्लोरियस इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : "40 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 60 महिला मजदूरों की तनखा 2500 रुपये। पुरुष मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3500-4000 रुपये। डेढ सौ मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **व्हर्लपूल, एल जी, वीडियोकॉन** के पुर्जे तथा इनवर्टर का सामान बनाते हैं। रविवार को भी ओवर टाइम काम। चार घण्टे ओवर टाइम के मात्र 50 रुपये देते हैं। पानी बहुत खराब है – पेट की बीमारियाँ लिये है। हैल्परों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

बी एल कन्टेनर्स श्रमिक : " प्लॉट 153 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5000 रुपये। ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 6000-8000 रुपये। जबरन रोक कर लगातार 36 घण्टे भी काम करवाते हैं। जब 36 घण्टे रोकते हैं तब रोटी के लिये मात्र 15 रुपये देते हैं। गाली, मारपीट। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 में 20-25 की ही हैं। पीने का पानी खराब। शौचालय बहुत गन्दे। नौकरी छोड़ो तो हिसाब नहीं देते, कहते हैं काम करो।"

जगसन पॉल फार्मास्युटिकल्स कामगार : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 15 कैजुअल महिला मजदूरों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

के डी आर फोरजिंग वरकर : " प्लॉट 14 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3300-3500 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 16-18 तारीख को। पानी की दिक्कत। शौचालय गन्दा रहता है।"

डायनेमिक मजदूर : " प्लॉट 5 सी सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3300 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

बी एच पी श्रमिक : "प्लॉट 7 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 200 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं लेकिन महीने में 15 दिन तक ड्युटी से हटा देते हैं। अप्रैल में और फिर मई में 15-15 दिन ही काम। दो हजार में खर्चा कैसे चले ? साहब कहता है कि काम नहीं होने पर मजदूर 'दिहाड़ी नहीं' के लिये तैयार रहें।"

विनायक कामगार : " प्लॉट 111 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर महीने के 4500 रुपये देते हैं।"

स्काईटोन इलेक्ट्रिकल्स वरकर : "42-43 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 40 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रविवार को दिन में 12 घण्टे ही काम। ओवर टाइम के पैसे स्थाई मजदूरों को डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। पाँच वर्ष से ट्रेनी कहे जाते मजदूरों ने जनवरी से देय डी.ए. के 300 रुपये माँगे तो 15 मई को कम्पनी ने 9 को निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत। छह को वापस ले लिया है पर 3 बाहर हैं और कम्पनी कह रही है कि श्रम विभाग से शिकायत वापस लो तब फैक्ट्री में लेंगे। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3500-3800 रुपये है।" **नूफार्म मजदूर :** "20/6 मथुरा रोड़ स्थित फ़ैक्ट्री में फरवरी, मार्च, अप्रैल और मई की तनखायें आज 11 जून तक नहीं दी हैं। अब 42 स्थाई मजदूर ही यहाँ हैं। तीन शिफ्ट हैं और मार्च माह से 8 घण्टे बैठ कर आते हैं।"

आर आर ऑटोटेक श्रमिक : " प्लॉट 150 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3200 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **हीरो होण्डा** मोटरसाइकिलों के पुर्जे बनते हैं।"

सुपर एज कामगार : " प्लॉट 109 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 8 घण्टे रोज पर 26 दिन की बजाय 30 दिन पर हैल्परों को 4214 और ऑपरेटरों को 4314 रुपये देते हैं। महीने के तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एजिको वरकर : "व्हर्लपूल के सामने इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 7 की शिफ्ट है। रविवार को सॉय 4½ छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा 3000-4000 रुपये और मई की आज 15 जून तक नहीं दी है। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पानी खराब। शौचालय गन्दा। छोड़ने पर 15-20 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। साहब गाली देता है।"

खन्ना इन्डस्ट्रीज वरकर : " प्लॉट 101 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000-3500 और ऑपरेटरों की 3840 रुपये। सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में 10 की ही।"

इन्टरनेशनल फोरजिंग श्रमिक : "प्लॉट 196 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 125 मजदूरों में 10-12 के ही। पीने का पानी खराब। मात्र एक शौचालय – गन्दा रहता है।"

वी एक्स एल टैक्नोलोजीज मजदूर : "20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 14 जून को यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते के बाद 6 फरवरी से बन्द फैक्ट्री खुल गई है। इतने बुरी तरह फँसा दिये थे कि समझौते अनुसार आधे स्थाई मजदूरों को नौकरी से इस्तीफे देने पड़े हैं। इस तरह कई बार छँटनी कर कम्पनी ने स्थाई मजदूरों की सँख्या 500 से 45 पर ला दी है।"

पहली मई को गुड़गाँव में **रीको ऑटो** फैक्ट्री के अन्दर दरी-शामियाने लगा कर यूनियन का झण्डा फहराया गया। इस यूनियन का पंजीकरण मैनेजमेन्ट द्वारा करवाने की चर्चा है। जो 7 मजदूर बाहर थे वे हिसाब ले कर चले गये हैं और उनके बिक जाने की बातें फैलाई जा रही हैं।

फॉक्सकॉन हत्यायें

ठेके पर इलेक्ट्रोनिक्स पुर्जे बनाने वाली विश्व की सबसे बड़ी फैक्ट्री चीन में फॉक्सकॉन कम्पनी की है। इस फैक्ट्री में दो लाख सत्तर हजार मजदूर काम करते हैं जिनमें 2 लाख 15 हजार महिला मजदूर हैं। कम्प्युटर क्षेत्र में नामी एपल, डेल, एच पी कम्पनियों के लिये फॉक्सकॉन फैक्ट्री में हिस्से-पुर्जे बनते हैं। विशाल फैक्ट्री में सिनेमा हॉल और तरणताल हैं.....असहय पीड़ा झेलते फॉक्सकॉन फैक्ट्री में 11 मजदूर इमारतों से कूद कर आत्महत्या कर चुके हैं।

महीने में एक बार छापते हैं, 8000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

गुड़गाँव में मजदूर

धीर इन्टरनेशनल मजदूर : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9-9½ से रात 11-11½ की ड्युटी हर रोज है। कई मजदूर महीने में 15 बार सुबह 9 बजे लग कर अगली सुबह 4 बजे छूटते हैं और फिर 9 बजे से ड्युटी। रविवार को सुबह 9 से साँय 4 तक काम। कई मजदूर सप्ताह में एक-दो बार रात 2 बजे और प्रत्येक शनिवार को सुबह 9 बजे लगते हैं तथा रविवार की सुबह 6 बजे छूटते हैं। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब रोटी के लिये 20 रुपये और पूरी रात रोकते हैं तब 40 रुपये देते हैं। कैन्टीन नहीं है। महीने में 140-225 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 16 रुपये 20 पैसे प्रति घण्टा। गड़बड़ कर हर महीने 1,000 रुपये तक खा भी जाते हैं। एतराज पर कहते हैं कि यहाँ घोटाला होता है, आते क्यों हो। पीट भी देते हैं। यहाँ **गैप, टरमिना, बेबी बे** का माल बनता है। काम का बहुत भारी दबाव है – हर मिनट का उत्पादन निर्धारित है। टारगेट पूरा नहीं होने पर गालियाँ, मारपीट भी। प्रोडक्शन और फिनिशिंग में कार्य करते करीब 4000 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कटिंग वाले 50 तथा 10-12 वर्ष से काम कर रहे 500 मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों में पुरुषों की तनखा 3500 और महिलाओं की 3200 रुपये। तनखा हर महीने देरी से, मई की 12 और 21 जून को दी। पानी ठीक नहीं है– बायर आते हैं तब 'यह पानी पीने लायक नहीं है' चिपका देते हैं, उनके जाते ही वही पानी पीना पड़ता है।"

जय स्विच श्रमिक : " 417 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में मोल्डिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और असेम्बली में 8 घण्टे के बाद अतिरिक्त समय। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और किस्तों में – मई के 15 दिन के ओवर टाइम के पैसे 20 जून को दिये, बाकी पता नहीं कब देंगे।"

सुरक्षा कर्मी : " 138 उद्योग विहार फेज-4 में कार्यालय वाली **चेकमेट सेक्युरिटी** करीब 4500 गार्ड सप्लाई करती है। ड्युटी 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के गार्ड को 5300 रुपये। इन में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 500 रुपये काट लेते हैं। दो वर्ष ड्युटी करते हो जाने पर भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। गाली देते हैं।"

रेणुका एक्सपोर्ट वरकर : " 723 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। जाँच वाले आते हैं और सन्तुष्ट हो कर चले जाते हैं। इस समय काम कम है इसलिये शिफ्ट सुबह 9 से रात 8 की है अन्यथा रात 1 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3200-3500 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : " 236 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में गर्मी में पानी की भारी परेशानी है। मजदूरों के लिये 6 फ्रिज हैं, सब खराब हैं। सुबह 9½ से रात 9-10 की ड्युटी रोज है और जबरन रात 2 बजे तक रोकते हैं। रविवार को भी काम। छुट्टी देते ही नहीं। अत्याधिक काम के कारण फिनिशिंग विभाग में बटन बन्द करने वाले एक मजदूर की मई माह में कमरे पर मृत्यु हो गई। कम्पनी द्वारा स्वयं रखों को महीने में 48 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को पूरे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। मजदूरों के लिये कूलर हैं ही नहीं। काज-बटन वाले स्थल पर एग्जास्ट फैन भी नहीं हैं। पार्ट चेन्ज स्थल पर नीचे वाशिंग व बॉयलर के कारण भारी गर्मी रहती है और यहाँ दो महीने से एग्जास्ट खराब है। यहाँ **मैसी, डीलक्स** का माल बनता है।"

शिवांग एक्सपोर्ट श्रमिक : " 671-72-73 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9-9 ¼ से रात 2 बजे तक रोज ड्युटी। महिला मजदूरों को रात 9 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रोटी के लिये मात्र 20 रुपये देते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे हैल्परों की तनखा 3914 रुपये – दो महीने से कह रहे हैं कि अगले महीने से 4214 देंगे, पर देते नहीं। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150 रुपये। ठेकेदार के जरिये रखे धागा कटिंग मजदूरों की तनखा 3500 रुपये। फैक्ट्री में 1000 से अधिक मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी. एफ. मात्र 50 के ही हैं। कैन्टीन नहीं है।"

ज्योति एपरेल्स कामगारः " 159 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9 ¼ से रात 1 बजे तक काम, महीने के तीसों दिन। महीने में 200-270 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **पटीट, हेमा** का माल बनता है। पानी बहुत खराब है। जनरल मैनेजर बहुत गाली देता है।"

आई एम टी मानेसर

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 21 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्टाफ ही कम्पनी ने स्वयं रखा है और 700 मजदूर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। दो शिफ्ट हैं, दिन में 10½ घण्टे और रात में 11½-13½ घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं। वर्षों से काम कर रहों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं – एक बार कच्चा कार्ड देते हैं और उसके बाद वह भी नहीं। पी.एफ. जमा करते हैं कि नहीं इसका पता नहीं पर तीन महीने में छोड़ने-निकाले जाने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। वर्ष 2008 का बोनस मार्च 2010 में दिया और पूरे वर्ष काम करने वालों को 1000-1200 से 3500 रुपये तक ही दिये। सवेतन छुट्टियों के पैसों में भी हेराफेरी – कहते हैं पूछो मत, जो दे रहे हैं वो ले लो। उत्पादन बढाते रहते हैं। वैल्डिंग विभाग में नये भर्ती से उत्पादन बढवा कर पुराने मजदूरों को बढाने को कहा और इस पर तनखा बढाने की कही तो बोले कि गेट बाहर जा सकते हो। फैक्ट्री में 42 पावर प्रेस हैं। उत्पादन बढाने के लिये सुरक्षा प्रबन्ध हटा दिये हैं – सेफ्टी गार्ड के साथ 2000 पीस निकलते हैं तो उसे हटा कर 4000 पीस। उत्पादन जारी रखने के फेर में मेन्टेनैन्स के लिये भी पर्याप्त समय तक मशीनें रोकने नहीं देते। सेफ्टी गार्ड हटाने, ढँग से मेन्टेनैन्स नहीं होने, और काम के दबाव के कारण पावर प्रेसों पर हाथ बहुत कटते हैं। हाथ कटने पर ई.एस.आई...... और फिर नौकरी से निकाल देते हैं। फैक्ट्री में कार और मोटरसाइकिल के साइलैन्सर बनते हैं। शिफ्ट समाप्त होने के बाद फैक्ट्री से निकलने में एक घण्टा तक लग जाता है – सब मजदूरों की एक पंक्ति, धीरे-धीरे खिसकती है।"

सुमैक्स श्रमिक : " प्लॉट 6 सैक्टर-5, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में जबरन रोकते हैं, रात-भर काम करवाने के लिये सुरक्षा कर्मी गेट से निकलने नहीं देते। सुबह 7½ तथा 9 बजे काम आरम्भ होता है और रात को काम करवाते हैं तब रात 9 बजे कम्पनी बाहर से खाना मँगवाती है। भोजन ठीक नहीं। फिर रात 10 से सुबह 4½ तक काम। सुबह 7½ बजे पुनः काम में लग जाओ तो 15½ घण्टे ओवर टाइम और 9 बजे काम आरम्भ करो तो 13½ घण्टे ओवर टाइम। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान सिंगल रेट से।"

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर कामगारः " प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3, मानेसर स्थित फैक्ट्री में आई.टी.आई. कियों को ठेकेदारों के जरिये रखते हैं। एक वर्ष पूरा होने पर 15 दिन का ब्रेक कर कुछ को री-ज्वाइनिंग खाते में तो कुछ को न्यू ज्वाइनिंग खाते में करते हैं। री-ज्वाइनिंग के 3 महीने बाद परीक्षा लेते हैं। पिछले वर्ष 490 मजदूर परीक्षा में बैठे थे। छब्बीस को ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर से कम्पनी कैजुअल वरकर बनाया। दो वर्ष तक कम्पनी कैजुअल रखने के बाद स्थाई करने पर कम्पनी विचार करेगी..... 2005 में 1700 मजदूर स्थाई थे, 2010 में 1800 हैं। इस वर्ष परीक्षा नहीं ली है – भिवाड़ी में कम्पनी की नई फैक्ट्री चालू होने वाली है, तब शायद परीक्षा लेंगे। दो शिफ्ट हैं, मार्च तक एक शिफ्ट में 1025 मोटरसाइकिल का उत्पादन निर्धारित था जिसे अप्रैल में 1075 किया। मई में पुनः 1025 किया पर कभी किसी पार्ट सप्लायर के यहाँ तो कभी किसी पार्ट सप्लायर के यहाँ हड़ताल के कारण यह टारगेट भी पूरा नहीं हुआ। पुर्जों की कमी के कारण एक या दो घण्टे खाली बैठना पड़ता, शिफ्ट में कभी 600 तो कभी 700 मोटरसाइकिल ही बनी। और, होण्डा मैनेजमेन्ट ने निर्धारित उत्पादन नहीं होने पर सब मजदूरों की मई माह की तनखा से पैसे काट लिये..... ठेकेदारों के जरिये रखों **(बाकी पेज चार पर)**

दिल्ली में मजदूर

1 फरवरी 2010 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 5272 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 5850 रुपये (8 घण्टे के 225 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये) /स्टाफ में स्नातक एवं अधिक: 7020 रुपये (8 घण्टे के 270 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054।

दिल्ली मैट्रो रेल मजदूर : "निर्माण की आवश्यकता अनुसार कार्यस्थल बदलते रहते हैं, इस समय बदरपुर बॉरडर पर हमें काम में लगा रखा है। ठेकेदार के जरिये दिल्ली मैट्रो ने हमें रखा है। हम में हैल्परों को 8 घण्टे के 110 रुपये और कारीगरों को 170 रुपये देते हैं। हम से रोज 12 घण्टे की ड्युटी, महीने के तीसों दिन काम करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। निर्माण-स्थल पर हर समय खतरे रहते हैं.... सुरक्षा के नाम पर हमें सिर्फ यह टोप दिये हैं। हमारी कोई ई.एस.आई. नहीं है, हमारा कोई फण्ड नहीं है। ठेकेदार एक-एक कमरे में कई-कई मजदूरों को रखता है – सोने में भी परेशानी है।"

परफेक्ट बेवरेज श्रमिक : "ए-268/1 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में हम 22 मजदूर 50 हजार लीटर पानी बीस लीटर की बोतलों और प्लास्टिक के ग्लासों में प्रतिदिन भरते हैं। पूरे समय लादना, चढाना, उतारना का काम है, बहुत मेहनत का काम है। कम्पनी न्यूनतम वेतन भी नहीं देती, 8 घण्टे पर महीने के 4000-4500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुपरवाइजर हर समय सिर पर खड़ा रहता है।"

अनशुन मल्टीटेक कामगार : "बी-123 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में जिप बनाते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5000 रुपये देते हैं। कारीगरों की तनखा 4200 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

स्टाइल काउंसिल वरकर : "डी-96 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500-4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं। नाइट लगवाते हैं तब 30 रुपये रोटी के देते हैं। मैडम गाली देती है।"

सुरक्षा कर्मी : "लाल बत्ती के पास, समालका में कार्यालय वाली **एम एस के सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4000-4200 रुपये। इन्हीं में से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं मिलता और छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। फील्ड अफसर बीमार गार्ड को देखने भी नहीं पहुँचते और दूसरे गार्ड के आने पर ही छूटते हैं। जबरन 36 घण्टे ड्युटी करवाते हैं, तब भी रोटी के [illegible] पैसे नहीं देते। मई की तनखा 19 जून को दी। हर महीने गडबड़ी कर 200-300 रुपये खा भी जाते हैं।" **कैक इण्डिया मजदूर :** "ए-253 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। इस प्रकार जो बनते हैं उन में से भी गड़बड़ी कर 100-200 रुपये हर महीने खा जाते हैं। मैनेजर बदतमीजी करता है।"

आई एम टी मानेसर (पेज तीन का शेष)

की वर्ष में 29 छुट्टी बनती हैं पर चेतावनी है कि 15 से ज्यादा छुट्टी पर री-ज्वाइनिंग नहीं होगी। वैसे, 15 छुट्टी भी देते ही नहीं। तत्काल तो छुट्टी देते ही नहीं, दो सप्ताह पहले बोलना पड़ता है और इमरजैन्सी लिखना पड़ता है, दादा-दादी को मारना पड़ता है। बीमार पड़ने अथवा अन्य कारण से अचानक छुट्टी करने को अनप्लान्ड छुट्टी बोलते हैं और निकालने की धमकी देते हैं। दादागिरी है और टीम लीडर, लाइन लीडर कहेंगे कि इसकी री-ज्वाइनिंग करो, इसकी मत करो। अब 1800 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूर प्रोडक्शन में हैं। स्थाई मजदूर मुख्यतः देख-रेख, रिलीवर और अनप्लान्ड छुट्टी वाले के बदले काम करते हैं। उत्पादन कार्य मुख्यतः ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर करते हैं..... मोटरसाइकिल इंजन विभाग में एक शिफ्ट में 4 इंजिनियर, 12 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 110 मजदूर काम करते हैं। स्थाई मजदूरों की तनखा 18,000 तथा इनसेन्टिव 10,000 रुपये जबकि ठेकेदारों के जरिये रखों की 7500 रुपये। इन 7500 में से ई.एस.आई. व पी.एफ. कट कर 6250 रुपये बनते हैं पर यह भी निर्धारित उत्पादन पूरा होने पर ही – मई में 5900 रुपये दिये। लाइन की रफ्तार इतनी ज्यादा रहती है कि 8 घण्टे बाद काम करने की हिम्मत नहीं रहती पर मजबूरी में करते हैं, महीने में 150 घण्टे तक ओवर टाइम करते हैं – घर की परेशानियों के कारण ही तो बाहर निकले हैं। ओवर टाइम के 35 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं जबकि हीरो होण्डा की धारूहेड़ा फैक्ट्री में 50 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं। ओवर टाइम में दुभान्त भी....."

कुरू बॉक्स वरकर : "प्लॉट 12 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में ड्युटी ही 9½ घण्टे की है और फिर गेट पर ताला लगा कर जबरन रोकते हैं, लगातार तीन दिन रोक लेते हैं। कहने को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर एक दिन छुट्टी करने पर ओवर टाइम से 8 घण्टे काट लेते हैं और महीने में चार छुट्टी करने पर ओवर टाइम के पैसे आधे कर देते हैं। दो महीने काम करते हो जाते हैं तब एक महीने की तनखा देते हैं, एक महीने के पैसे हर समय फँसा कर रखते हैं। साहब लोग बहुत गाली देते हैं।"

जुड़ने–जोड़ने के लिये

मजदूर समाचार तालमेल

★ मिल कर कदम उठाने के लिये पहली जरूरत मिलने-जुलने के अवसरों की है। कारखानों में हम एकत्र होते हैं पर वहाँ सहज बातचीत पर अनेक रोक हैं। रोज 12-16 घण्टे की ड्युटियाँ और फिर आने-जाने में लगता समय, सब्जी-राशन लेना, पानी भरना, तेल-गैस के जुगाड़, भोजन बनाना अथवा बच्चों-पत्नी-पति के लिये समय। ऐसे में अधिकतर मजदूरों के लिये कहीं जा कर मिलने के लिये समय निकालना बहुत-ही मुश्किल है। ...... ऐसे में मजदूर समाचार तालमेल अपना प्रारम्भिक कार्य बस्तियों में मिलने-जुलने के लिये स्थानों का प्रबन्ध करने को बना रहा है। ....

★ संगठन में कोई पद नहीं होंगे। .... स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर, कर्मचारी, सब मजदूर संगठन के सदस्य बन सकते हैं। निजी स्तर पर आर्थिक सहयोग का स्वागत करेंगे परन्तु संस्थाओं से पैसे नहीं लिये जायेंगे।

★ मजदूर समाचार तालमेल पंजीकरण नहीं करवायेगा। कम्पनियों-सरकारों से संगठन बहस नहीं करेगा, उन्हें समझाने की कोशिशें नहीं करेगा, अधिकारियों के साथ समझौता वार्तायें नहीं करेगा। आमतौर पर संगठन प्रतिक्रियायें नहीं देगा। हम अपने हिसाब से कदम उठायेंगे और प्रतिक्रियायें देना कम्पनियों-सरकारों के पाले में रहने देंगे।......

★ हम आशा करते हैं कि कुछ महीनों में मिल कर कदम उठाने की वो स्थितियाँ बन जायेंगी कि सदस्य व अन्य मजदूर छोटी-छोटी राहत हासिल कर सकेंगे।......

★ भारत सरकार के अधीन न्यायालयों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। ...

★ ...... आम मजदूर जो आसानी से कर सकते हैं वो करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया जायेगा।

★ .... संगठन पूरे विश्व में मजदूरों की पहलकदमियों के संग खासकरके और जनता की पहलकदमियों के संग आमतौर पर तालमेलों के लिये विशेष प्रयास करेगा।......

बैठकें :

1. सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने) अल्ला मोहल्ला, तेखण्ड – ओखला, दिल्ली। 2. वीरवार को गायकवाड़ नगर (फरीदाबाद न्यू टाउन स्टेशन के पास)।
3. रविवार को प्लॉट नं. 108, पुराने सरकारी स्कूल की बगल में, मुजेसर (फरीदाबाद)।
4. देशराज (कालू) का मकान, तालाब के पास, रामपुरा, गुड़गाँव।
5. कमरा नं. 25 लक्खीराम का मकान, गली नम्बर–6, कापसहेड़ा, दिल्ली।
6. मकान नम्बर 24, राजस्थान कॉलोनी, संजय मैमोरियल नगर, एन.एच. 4 फरीदाबाद।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011